



महाविद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों की जीवनशैली का अध्ययन

अंजू चौधरी

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में महाविद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों की जीवनशैली का अध्ययन किया गया है। वर्तमान शोध के लिये राजस्थान राज्य के झुंझुनू जिले के दो राजकीय महाविद्यालयों में पढ़ रहे 461 विद्यार्थियों का चयन किया गया। शोध उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मानकीकृत उपकरण के रूप में बावा और कौर द्वारा निर्मित 'लाइफस्टाइल स्केल प्रश्नावली' का उपयोग किया गया। 'लाइफस्टाइल स्केल प्रश्नावली' के अंतर्गत कुल 6 प्रकार की जीवनशैली जैसे स्वास्थ्य सम्बन्धित, अकादमिक उन्मुख, व्यवसाय उन्मुख, परिवारोन्मुखी, समाजोन्मुखी तथा चलन सम्बन्धित जीवनशैली का विद्यार्थियों के लिंगवार भिन्नता के संदर्भ में अध्ययन किया गया। सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के लिये मध्यमान, प्रमाप विचलन और 'टी' परीक्षण का उपयोग किया गया।

मूल शब्द: महाविद्यालय, विद्यार्थी, जीवनशैली प्रश्नावली, सर्वेक्षण, सांख्यिकी अध्ययन

प्रस्तावना

समाज निरंतर गतिशील रहता है। समाज की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियों में लगातार परिवर्तन होता रहता है। इस परिवर्तनशीलता का ही परिणाम है कि आज हमारे समाज की रचना और स्वरूप में भी अंतर देखने को मिलता है। भारतीय समाज और संस्कृति बहुत प्राचीन है लेकिन प्राचीनता के साथ-साथ भारतीय समाज और संस्कृति में निरन्तरता भी देखने को मिलती है।

भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का इतिहास अनेक उतार-चढ़ाव, अनेक उत्थान-पतन और अनेकों परिवर्तनों का इतिहास है। स्वाभाविक है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है और उस नियम से भारतीय समाज भी अछूता नहीं रह पाया। हालांकि, भारतीय समाज ने समय की आवश्यकता के अनुसार अपनी अनुकूलनता को दर्शाया है और शायद यही कारण है कि कई विप्लवकारी घटनाओं के बावजूद भी भारतीय समाज और सभ्यता अपने आपको निरंतर बनाये रखी है। भारत में भी सामाजिक परिवर्तन आज के परिदृश्य में स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है। जिनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव समाज में हर वर्ग, उम्र और लिंग के व्यक्तियों की जीवन जीने के तरीकों में बदलाव के रूप में दिखाई देता है। स्वाभाविक है कि इन परिवर्तनों का प्रभाव युवा पीढ़ी पर भी होता है जिसके चलते इनकी जीवन-शैली में भी आमूलचूक परिवर्तन आते हैं, जिसको समझना आवश्यक है।

जीवनशैली से तात्पर्य जीवन जीने के तरीके से है। मैक्स वेबर के अनुसार "जीवनशैली प्रस्थिति समूहों को अभिलक्षित करती है प्रस्थिति समूह से वेबर का तात्पर्य ऐसी समूहों से है जिनमें सकारात्मक और नकारात्मक, सम्मानसूचक मानदंड शामिल होते हैं (दोषी तथा जैन, 2002)। नंदना ने जीवनशैली को एक निश्चित तौर-तरीकों के रूप में बताया है जो किसी भी व्यक्ति के द्वारा जीवन पर्यंत अपनाये जाते हैं और इनकी नींव परिवारों में रखी जाती है। उन्होंने साथ ही यह भी बताया कि ये तौर-तरीके किसी भी संस्कृति, जाति, धर्म, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों से प्रभावित होते हैं (Nandna, 2002)।

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के द्वारा सामाजिक वातावरण में व्यक्तियों के बदलते हुए क्रियाकलापों और व्यवहारों के अवलोकन तथा जीवन शैली से संबंधित किए गए अध्ययनों द्वारा कई विशिष्ट जीवन शैलियों को पहचाना गया है जिन्हें प्रमुख रूप से छरू वर्गों में निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है:

स्वास्थ्य केंद्र जीवनशैली (Health Conscious Lifestyle)

इस प्रकार की जीवनशैली से तात्पर्य है जब कोई व्यक्ति सदैव स्वयं को शारीरिक रूप से हफ्ट पुष्ट रखने के लिए विचारशील होता है। शारीरिक स्वच्छता, पोषकपूर्णता, रोगमुक्तता और आकर्षक शरीर पर उसका दृष्टिकोण अधिक रहता है।

अकादमिक उन्मुख जीवनशैली (Academic Oriented Lifestyle)

इस प्रकार की जीवनशैली में व्यक्ति अधिकांशतया अपनी अकादमी क्रियाओं में ही संलग्न रहता है।

व्यवसाय उन्मुख जीवनशैली (Career Oriented Lifestyle)

इस प्रकार की जीवनशैली में व्यक्ति सदैव अपने व्यवसाय के बारे में अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करने हेतु जिज्ञासु रहता है।

परिवार उन्मुख जीवनशैली (Family Oriented Lifestyle)

इस प्रकार की जीवनशैली में व्यक्ति प्रमुख रूप से अपने परिवार के संग-संपर्क में रहता है और अपने दैनिक जीवन से जुड़ी क्रियाओं को अपने परिवार के साथ बांटता है ।

सामाजिक उन्मुख जीवनशैली (Socially Oriented Lifestyle)

इस प्रकार की जीवनशैली में व्यक्ति हमेशा समाज के लिए भलाई करता है और सामाजिक क्रियाओं में भाग लेता है ।

चलन संबंधित जीवनशैली (Trend Oriented Lifestyle)

इस प्रकार की जीवन शैली में व्यक्ति हमेशा नवीन प्रकार के चलन को अपनाता है और बदलते हुए चलन के अनुसार अपने आप को शीघ्रता से बदलता जाता है ।

भारतीय समाज में भी वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण के चलते लगातार किशोरों की जीवनशैली में परिवर्तन अअ रहे है । किशोरों के जीवन में जो आदतें पहले कभी किसी विशेष अवसरों पर ही दिखाई दिया करती थी आजकल दैनिक जीवनशैली में भी नजर आ जाती है । इस प्रकार की जीवनशैली के चलते अनेक प्रकार की समस्याएं भी जन्म ले रही है, इन समस्याओं की पहचान और उनका बदलती जीवनशैली से संबंध स्थापित करना आवश्यक है ताकि सामाजिक परिवर्तनशीलता के चलते किशोरों की जीवनशैली में होने वाले बदलावों पर उचित समीक्षा की जा सकें । इसके लिये यह भी आवश्यक है कि भारतीय समाज व्यवस्था में इन किशोरों के महत्व को समझा जाए और इनकी जीवनशैली से संबंधित अध्ययनों को प्रमुखता दी जाए (कुमारी, 2015) ।

इसी के अंतर्गत वर्तमान शोध पत्र में राजस्थान राज्य के झुंझुनू जिले के दो राजकीय महाविद्यालयों (1) राजकीय टिबड़ेवाल कन्या महाविद्यालय तथा (2) राजकीय मोरारका स्नातकोत्तर महाविद्यालय में पढ़ रहे विद्यार्थियों की 'जीवनशैली' का अध्ययन किया गया ।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैरू

1. महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की स्वास्थ्य के प्रति सचेत जीवनशैली को जानना ।
2. महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की अकादमिक उन्मुख जीवनशैली को जानना ।
3. महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की व्यवसाय के प्रति सचेत जीवनशैली को जानना ।
4. महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की परिवारोन्मुखी जीवनशैली को जानना ।
5. महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की समाजोन्मुखी जीवनशैली को जानना ।
6. महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की चलन सम्बन्धित जीवनशैली को जानना ।

परिकल्पना

महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की सभी प्रकार की जीवनशैली में कोई अंतर नहीं है ।

शोध पद्धति

अनुसंधान विधि

शोध अध्ययन की समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया ।

न्यदर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के झुंझुनू जिले के दो राजकीय महाविद्यालयों (1) राजकीय टिबड़ेवाल कन्या महाविद्यालय तथा (2) राजकीय मोरारका स्नातकोत्तर महाविद्यालय में पढ़ रहे कुल 461 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से चुना गया, इनमें 223 छात्र तथा 236 छात्राएं थी ।

अध्ययन के चर

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न चर हैरू

स्वतंत्र चर

जीवनशैली

आश्रित चर

लिंग, अभिरुचि, पारिवारिक स्थिति

शोध उपकरण

वर्तमान शोध में शोध के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मानकीकृत उपकरण के रूप में एस.के. बावा और एस. कौर (Bawa and Kaur, 2012) द्वारा निर्मित 'लाइफस्टाइल स्केल प्रश्नावली' का उपयोग किया गया ।

सर्वेक्षण विधि

अध्ययन के लिए सर्वप्रथम महाविद्यालय प्रशासन (प्राचार्य) से अनुमति लेकर शोध के लिए चयनित विद्यार्थियों से संपर्क साधा गया । विद्यार्थियों को निर्देश दिए गए कि शोध के अंतर्गत सर्वे के लिए प्रश्न-पत्र भरने के लिए आपका चयन किया गया है, इसमें शामिल सभी प्रश्न आपकी विभिन्न प्रकार की जीवनशैली को जानने से सम्बंधित है और उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता है कि वह इस सर्वे में भाग ले या नहीं । विद्यार्थियों के सर्वे पूर्ण कर लिए जाने के उपरांत शोधकर्ता के द्वारा

सभी प्रश्नावलियों को इकट्ठा करके प्रत्येक प्रश्न के उत्तर को यह जांचने के लिए देखा कि किसी प्रश्न के उत्तर को उत्तरदात्रियों ने भूलवश छोड़ तो नहीं दिया।

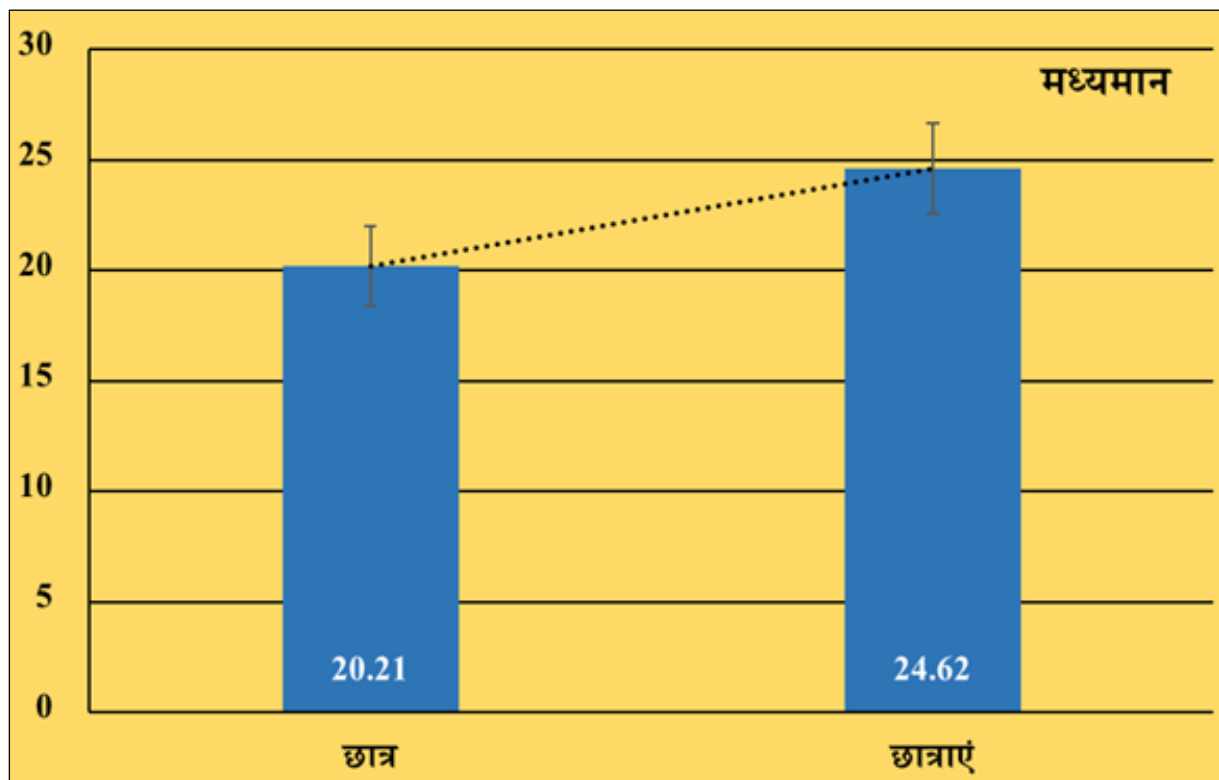
तथ्यों का संपादन, सारणीयन तथा सांख्यिकीय प्रविधियां

उत्तरदात्रियों के द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तरों को अच्छे से देखकर उन्हें उनके प्रतिक्रियात्मक विचारों के आधार पर साधारण सारणियों के रूप में प्रदर्शित किया गया। इसी के साथ शोधकार्य में प्राप्त समंको को व्यवस्थित एवं विश्लेषित करके निष्कर्ष प्राप्त करने हेतु शोध उपकरण विशेष के लिए मध्यमान, प्रमाप विचलन और 'टी' परीक्षण सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया।

परिणाम और चर्चा

सारिणी 1: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'स्वास्थ्य के प्रति सचेत जीवनशैली'

समूह	संख्या (N)	मध्यमान	प्रमाप विचलन	SEM	'टी'-मूल्य	Df (N1+N2-2)	सार्थकता स्तर
छात्र	223	20.21	1.78	0.11	24.45	459	0.0001
छात्राएं	238	24.62	2.07	0.13			



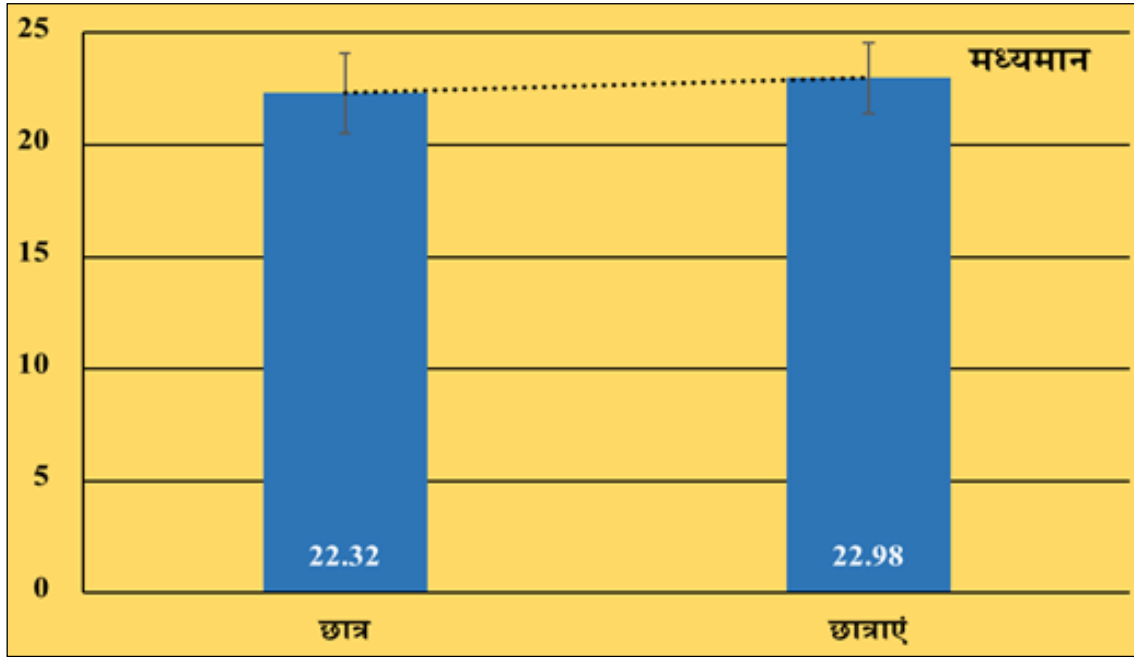
चित्र 1: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'स्वास्थ्य के प्रति सचेत जीवनशैली'

व्याख्या तथा विश्लेषण

उपरोक्त सारिणी महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'स्वास्थ्य के प्रति सचेत जीवनशैली' को प्रदर्शित करती है। छात्रों और छात्राओं दोनों के समूहों के मध्यमान क्रमशः 20.21 और 24.62 है। छात्राओं का मध्यमान छात्रों की तुलना में अधिक है और इनके मध्य का अंतर 4.41 है। शोध में प्राप्त आकड़ों से गणना करने पर 'टी' का मान 24.45 प्राप्त हुआ, जिसका सार्थकता स्तर 0.0001 है। इसका अर्थ यह है कि महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'स्वास्थ्य के प्रति सचेत जीवनशैली' में अत्यधिक सार्थक असमानताएं विद्यमान हैं।

सारिणी 2: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'अकादमिक उन्मुख जीवनशैली'

समूह	संख्या (N)	मध्यमान	प्रमाप विचलन	SEM	'टी'-मूल्य	Df (N1+N2-2)	सार्थकता स्तर
छात्र	223	22.32	1.78	0.11	4.24	459	0.0001
छात्राएं	238	22.98	1.56	0.10			



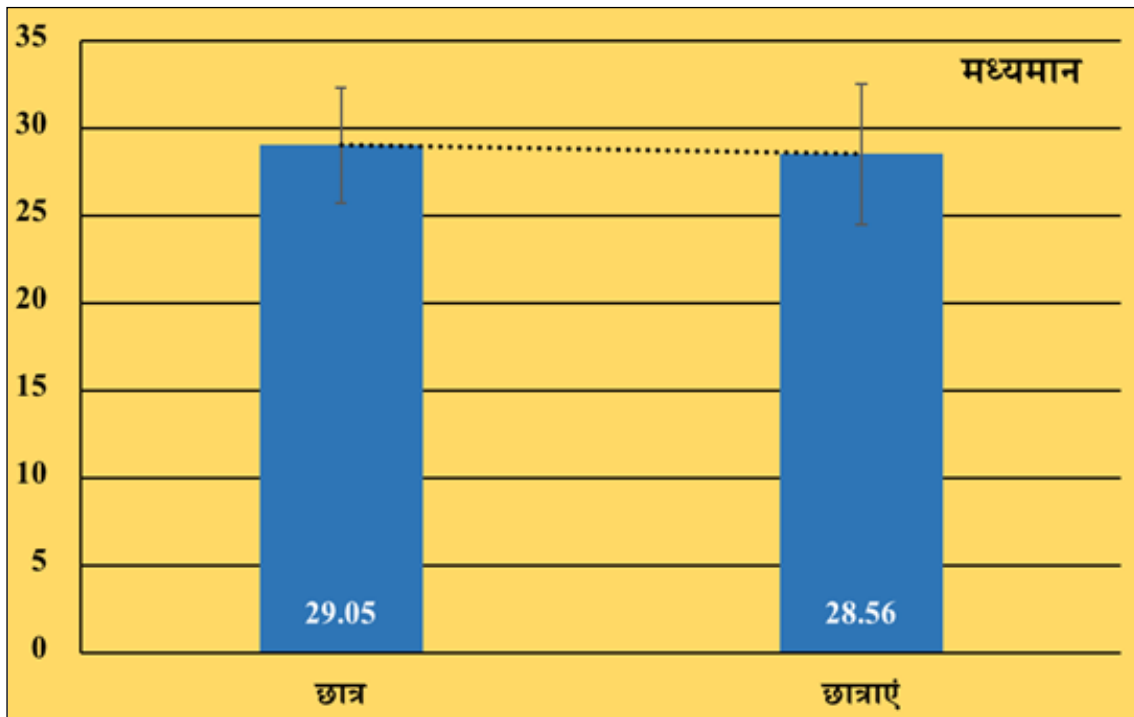
चित्र 2: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'अकादमिक उन्मुख जीवनशैली'

व्याख्या तथा विश्लेषण

उपरोक्त सारिणी महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'अकादमिक उन्मुख जीवनशैली' को प्रदर्शित करती है। छात्रों और छात्राओं दोनों के समूहों के मध्यमान क्रमशः 22.32 और 22.98 है। छात्राओं का मध्यमान छात्रों की तुलना में अधिक है और इनके मध्य का अंतर 0.66 है। शोध में प्राप्त आकड़ों से गणना करने पर 'टी' का मान 4.24 प्राप्त हुआ, जिसका सार्थकता स्तर 0.0001 है। इसका अर्थ यह है कि महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'अकादमिक उन्मुख जीवनशैली' में अत्यधिक सार्थक असमानताएं विद्यमान हैं।

सारिणी 3: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'व्यवसाय के प्रति सचेत जीवनशैली'

समूह	संख्या (N)	मध्यमान	प्रमाप विचलन	SEM	'टी'-मूल्य	Df (N1+N2-2)	सार्थकता स्तर
छात्र	223	29.05	3.27	0.21	1.43	459	0.49
छात्राएं	238	28.56	4.01	0.26			



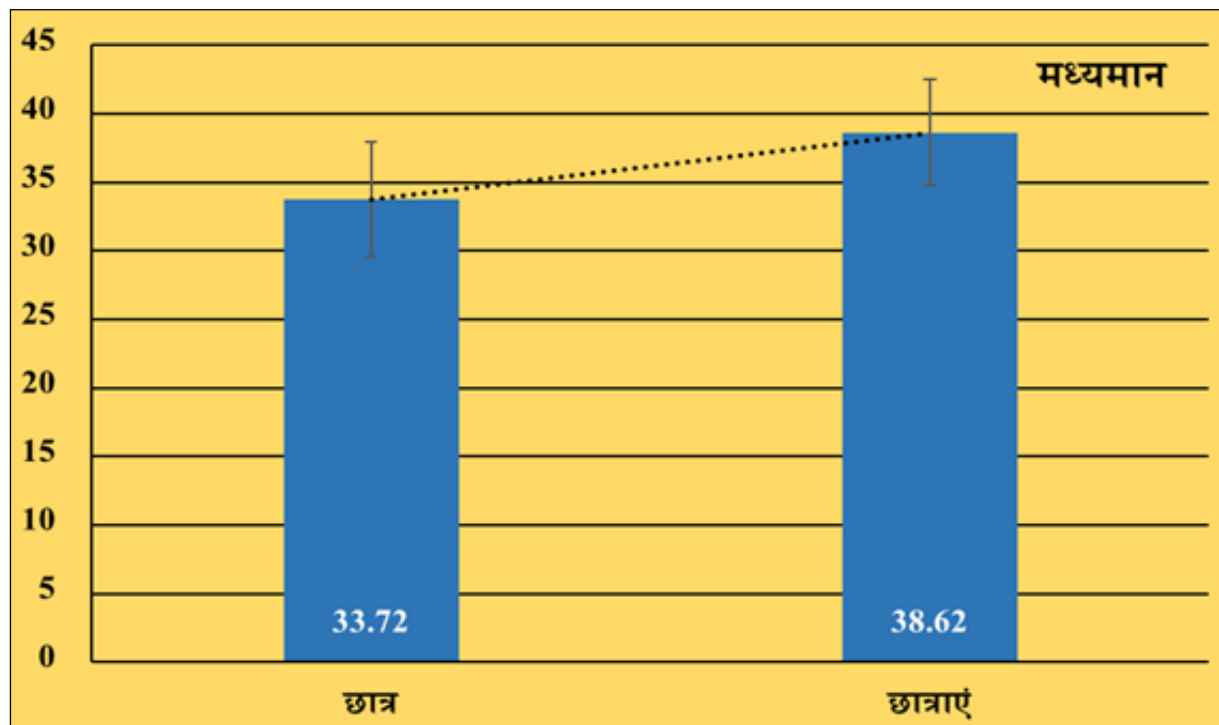
चित्र 3: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'व्यवसाय के प्रति सचेत जीवनशैली'

व्याख्या तथा विश्लेषण

उपरोक्त सारिणी महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'व्यवसाय के प्रति सचेत जीवनशैली' को प्रदर्शित करती है। शोध में प्राप्त आंकड़ों के आधार पर छात्रों और छात्राओं दोनों के समूहों के मध्यमान क्रमशः 29.05 और 28.56 है, जिसमें 0.49 के अंतर के साथ छात्रों का मध्यमान अधिक है। आंकड़ों की सांख्यिकी गणना करने पर 'टी' का 1.43 प्राप्त हुआ, जिसका सार्थकता स्तर 0.49 है। यह दर्शाता है कि महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'व्यवसाय के प्रति सचेत जीवनशैली' में कोई सार्थक अंतर नहीं है और यह एकरूपता रखते हैं।

सारिणी 4: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'परिवारोन्मुखी जीवनशैली'

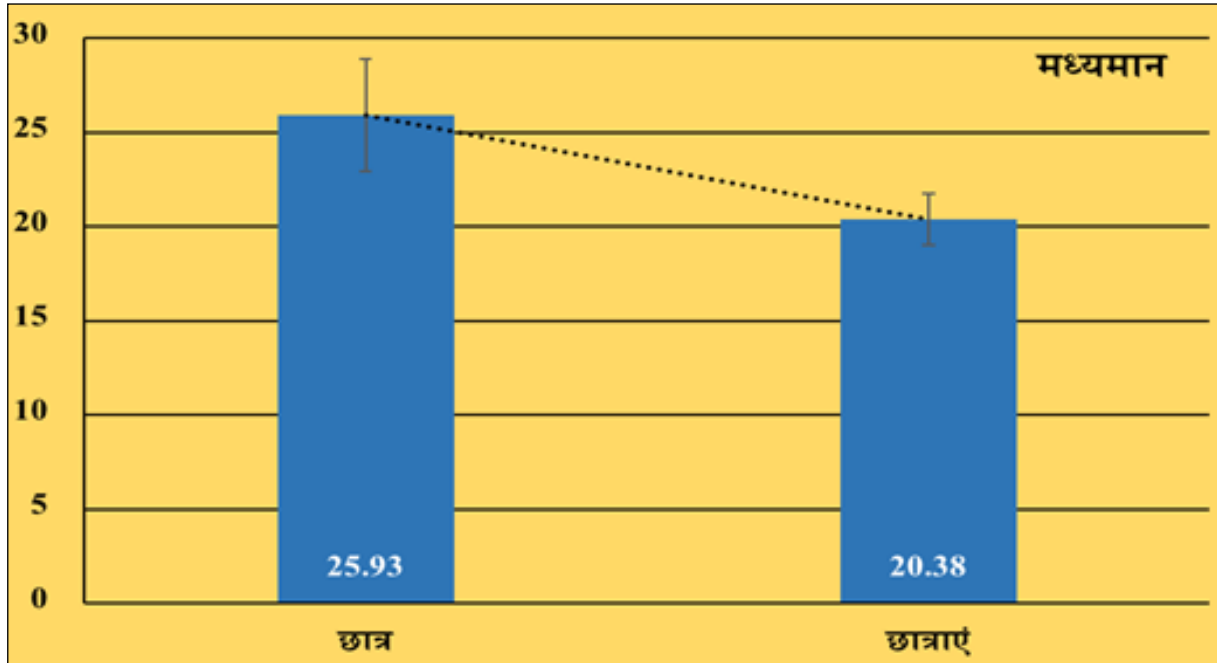
समूह	संख्या (N)	मध्यमान	प्रमाप विचलन	SEM	'टी'-मूल्य	Df (N1+N2-2)	सार्थकता स्तर
छात्र	223	33.72	4.19	0.28	13.06	459	0.0001
छात्राएं	238	38.62	3.86	0.25			

**चित्र 4:** महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'परिवारोन्मुखी जीवनशैली'**व्याख्या तथा विश्लेषण**

उपरोक्त सारिणी महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'परिवारोन्मुखी जीवनशैली' को प्रदर्शित करती है। सारिणी के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि छात्रों और छात्राओं दोनों के समूहों के मध्यमान क्रमशः 33.72 और 38.62 है। शोध में प्राप्त आंकड़ों की सांख्यिकी गणना करने पर 'टी' का मान 13.06 प्राप्त हुआ, जिसका सार्थकता स्तर 0.0001 है, इसका अर्थ यह है कि महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'परिवारोन्मुखी जीवनशैली' में अत्यधिक सार्थक असमानताएं विद्यमान हैं।

सारिणी 5: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'समाजोन्मुखी जीवनशैली'

समूह	संख्या (N)	मध्यमान	प्रमाप विचलन	SEM	'टी'-मूल्य	Df (N1+N2-2)	सार्थकता स्तर
छात्र	223	25.93	2.98	0.19	25.95	459	0.0001
छात्राएं	238	20.38	1.37	0.08			



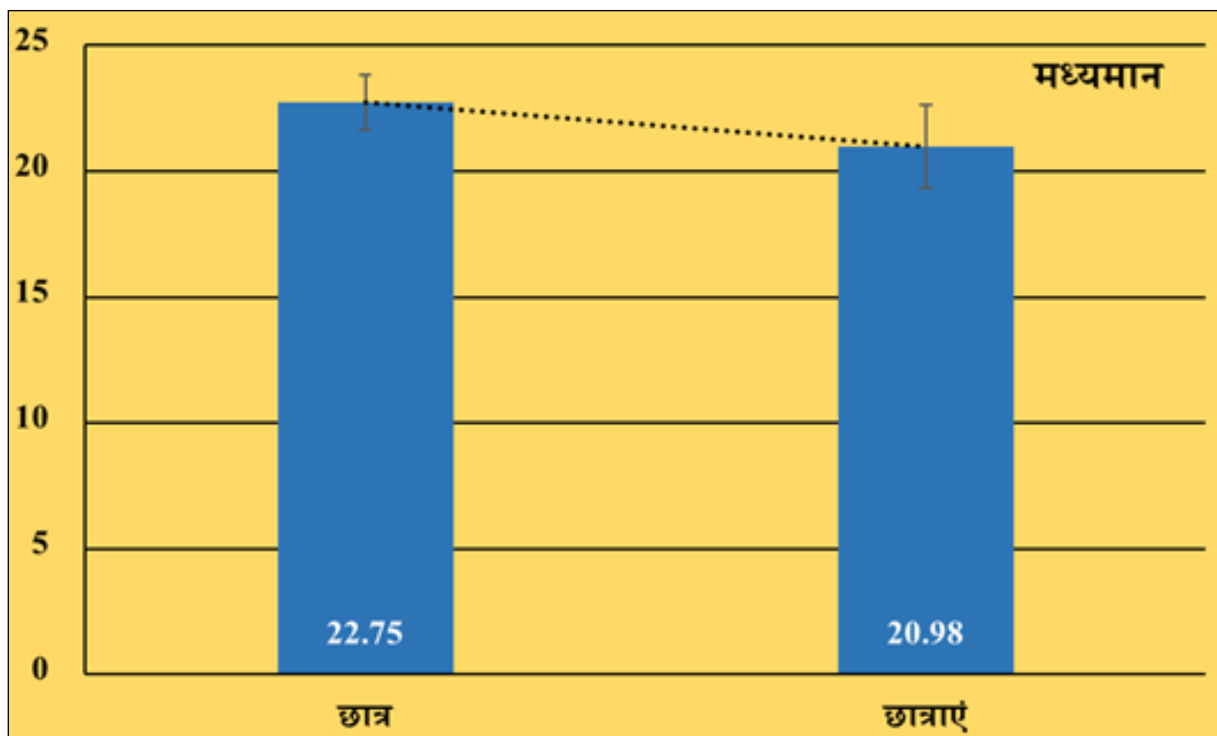
चित्र 5: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'समाजोन्मुखी जीवनशैली'

व्याख्या तथा विश्लेषण

उपरोक्त सारिणी महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'समाजोन्मुखी जीवनशैली' को प्रदर्शित करती है। छात्रों और छात्राओं दोनों के समूहों के मध्यमान क्रमशः 25.93 और 20.38 है, छात्रों का मध्यमान छात्राओं की तुलना में अधिक है और इनके मध्य का अंतर 5.55 है। शोध में प्राप्त आकड़ों से गणना करने पर 'टी' का मान 25.95 प्राप्त हुआ, जिसका सार्थकता स्तर 0.0001 है। इसका अर्थ यह है कि महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'समाजोन्मुखी जीवनशैली' में अत्यधिक सार्थक असमानताएं विद्यमान हैं।

सारिणी 6: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'चलन सम्बन्धित जीवनशैली'

समूह	संख्या (N)	मध्यमान	प्रमाण विचलन	SEM	'टी'-मूल्य	Df (N1+N2-2)	सार्थकता स्तर
छात्र	223	22.75	1.07	0.07	13.50	459	0.0001
छात्राएं	238	20.98	1.66	0.10			



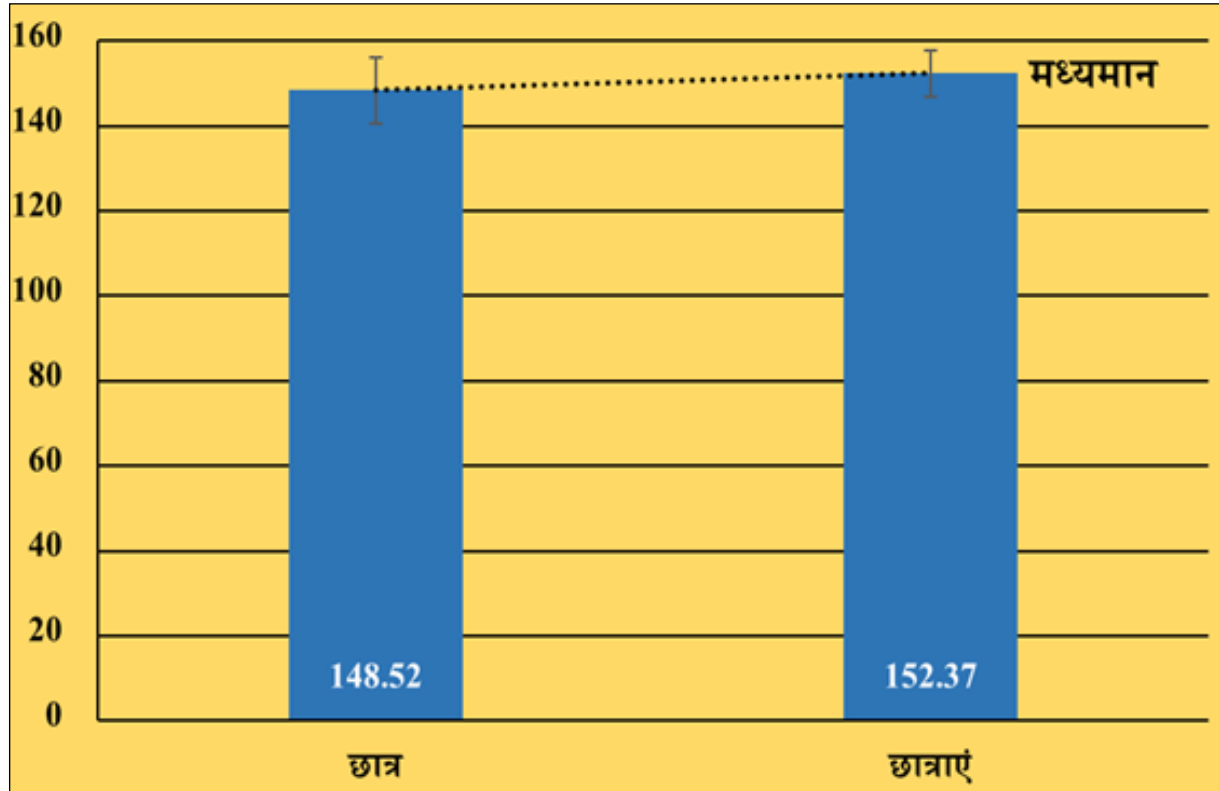
चित्र 6: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'चलन सम्बन्धित जीवनशैली'

व्याख्या तथा विश्लेषण

उपरोक्त सारिणी महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'चलन सम्बन्धित जीवनशैली' को प्रदर्शित करती है। शोध में प्राप्त आंकड़े दर्शाते हैं कि छात्रों और छात्राओं दोनों के समूहों के मध्यमान क्रमशः 22.75 और 20.98 है, जिसमें 1.77 के अंतर के साथ छात्रों का मध्यमान अधिक है। आंकड़ों की सांख्यिकी गणना करने पर 'टी' का मान 13.50 प्राप्त हुआ, जिसका सार्थकता स्तर 0.0001 है। इसका अर्थ यह है कि महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'चलन सम्बन्धित जीवनशैली' में अत्यधिक सार्थक असमानताएं विद्यमान हैं।

सारिणी 7: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के सभी आयामों को सम्मिलित रूप से प्रदर्शित करती सारिणी

समूह	संख्या (N)	मध्यमान	प्रमाप विचलन	SEM	'टी'-मूल्य	Df (N1+N2-2)	सार्थकता स्तर
छात्र	223	148.52	7.80	0.52	6.19	459	0.0001
छात्राएं	238	152.37	5.39	0.34			



चित्र 7: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जीवन शैली के सभी आयाम

व्याख्या तथा विश्लेषण

उपरोक्त सारिणी महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के सभी आयामों को सम्मिलित रूप से प्रदर्शित करती है। सारिणी के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि छात्रों और छात्राओं दोनों के समूहों के मध्यमान क्रमशः 148.52 और 152.37 है, जिसमें दोनों के मध्य 3.85 का अंतर है। आंकड़ों की सांख्यिकी गणना करने पर 'टी' का मान 6.19 प्राप्त हुआ, जिसका सार्थकता स्तर 0.0001 है। आंकड़ों में यह अंतर दर्शाता है कि महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली में अत्यधिक सार्थक असमानताएं विद्यमान हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में शामिल विद्यार्थियों की 'बावा तथा कौर' द्वारा निर्मित जीवनशैली मापनी में बताई गई सभी छः प्रकार की जीवनशैली – स्वास्थ्य के प्रति सचेत, अकादमिक उन्मुख, व्यवसाय के प्रति सचेत, परिवारोन्मुखी, समाजोन्मुखी तथा चलन सम्बन्धित जीवनशैली को छात्रों और छात्राओं दोनों के लिए मापा गया था। परिणामों से यह स्पष्ट रूप से इंगित होता है कि छात्राएं, छात्रों की तुलना में स्वास्थ्य के प्रति अधिक सचेत हैं। प्रश्नावली में पूछे गए कुछ प्रश्न जैसे डाइटिंग करना, प्रतिदिन नहाना, स्वास्थ्य संबंधित पुस्तकों को पढ़ना खाने से पूर्व और बाद में हाथ धोना, इनके लिए छात्राओं के प्रतिउत्तर अधिक धनात्मक थे। अकादमिक उन्मुख जीवनशैली के लिए छात्रों और छात्राओं के मध्यमानों में अंतर मात्र 0.66 ही रहा हालांकि सांख्यिकी गणना में यह अंतर 'टी' मान 4.24 के साथ सार्थक असमानता को दर्शाता है, जिसमें छात्राओं के अकादमिक उन्मुख जीवनशैली का मान अधिक रहा। व्यवसाय या करिअर के प्रति जीवनशैली में छात्रों और छात्राओं के मध्य कोई अंतर नहीं था जो यह दर्शाता है कि दोनों अपने करिअर के प्रति लगभग समान रूप से प्रतिउत्तर दर्शाते हैं। परिवारोन्मुखी जीवनशैली के प्रति छात्राओं तथा समाजोन्मुखी जीवनशैली के प्रति छात्रों के मध्यमान अधिक प्राप्त हुए। चलन संबंधित जीवनशैली में छात्रों का मध्यमान अधिक प्राप्त हुआ तथा साथ ही इनमें सार्थक असमानता भी विद्यमान थी

। जीवनशैली के सभी छरू आयामों को सम्मिलित रूप से अध्ययन किए जाने पर छात्राओं के मध्यमान छात्रों की तुलना में अधिक प्राप्त हुए । उपरोक्त परिणाम और व्याख्या से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वर्तमान समय में महाविद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों की जीवनशैली में परिवर्तन आ रहे हैं, यह अंतर लिंगवार अलग-अलग स्तर पर दिखाई देता है । स्वाभाविक है यह अंतर समाज में होने वाले निरंतर परिवर्तनों से तो आ ही रहा है साथ ही इसमें आधुनिकता और तेजी से बदलती तकनीकी भी शामिल है ।

संदर्भ सूची

1. दोषी, एस.एल., – जैन, पी.सी. (2002). सामाजिक विचारक. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 335.
2. Nandna LK. Correlation between life style and health consciousness- International Journal of Health Education, 2002:12(20):13-18.
3. Bawa SK, Kaur S. Manual of The Lifestyle scale, 2012.
4. कुमारी, यतेंद्र (2015). भारत का बदलता परिवेशरू बदलती युवा जीवनशैली । रिव्यू ऑफ रिसर्च जर्नल 4(7): 1-5.